शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी विमर्श

रेबेक्का जिरसांगकिमी
हिन्दी विभाग (शोधार्थी)
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

## शोध संक्षेप

उपन्यास आज सर्वाधिक विकासशील और व्यापक विधा है। उपन्यास में मानव के अंतर के रहस्योद्घाटन की भी अद्भुत सामश्र्य है। उपन्यास मानव जीवन का चित्र है, अतः उसमें मानव स्वभाव, गुण, रूचियों, अरूचियों एवं कार्य व्यापारों का उसमें अंतर्मन के तलस्पर्शी अध्ययन विश्लेषण को संपुष्ट चित्रण अपेक्षित है। विश्व में जितनी साहित्यिक विधाएँ हैं, उनमें लोकप्रियता के आधार पर उपन्यास प्रथम श्रेणी की विधा के रूप में सर्वमान्य है। साहित्यकार मानवीय परिवेशगत मूल्यों के उद्घाटन का प्रयत्न करता है और उनका यही प्रयत्न साहित्य सृजन करता है। समाज में होने वाले राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं वैचारिक परिवर्तनों के प्रति साहित्यकार अत्यंत सजग रहता है। वह अपनी कृतियों के विभिन्न पात्रों के माध्यम से उस परिवर्तन को समग्र रूप में प्रकट करने का प्रयत्न करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी विमर्श पर विचार किया गया है।

## प्रस्तावना

आधुनिक युग व्यक्ति स्वातंत्र्य और समानता का युग है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति के अवसर पाने के लिए मचल रहा है। अपने व्यक्तित्व के चैमुखी विकास के लिए आज हर किसी को समान अधिकार प्राप्त हैं चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरूष हो।

नारी विमर्श आज के साहित्य का ज्वलंत विषय है, नारी को केन्द्र बनाकर हिन्दी उपन्यास की विधा में कई विषयों पर पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं। उपन्यासों में रचनात्मक स्तर पर यह प्रयत्न सार्थक प्रतीत होता है। देश में आए दिन स्त्री स्वातंत्र्य और सम्मान के कसीदें पढ़े जाते हैं। आज औरतों की प्राथमिकताओं में बदलाव आया है। यह बदलाव उनके कार्य क्षेत्र व लेखन में भी देखा जा सकता है। नारी पराधीनता के प्रश्नों को लेकर साहित्यकारों के तेवर बड़े तीखे हैं। समाज को बदलने की प्रक्रिया में वे औरत की भूमिका को सामने रखते हैं। भारतीय समाज की संरचना में मौजूद अर्थ और वर्ण व्यवस्था जैसी तमाम विसंगतियों के चलते पुरूष सत्ता की गुलामी का शिकार स्त्रियों की अंतहीन यातनाएँ जहाँ-तहाँ बिखरी पड़ी हैं। इस समाज में स्त्री का स्थान विशेष तो है लेकिन उसकी सामाजिक हैसियत 'वस्तु' से अधिक कुछ नहीं है इसलिए यह तय करना है कि नारी की आजादी के लिए सामंती सोच को बदलना निहायत जरूरी है।

## अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी विमर्श

अलका सरावगी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श का जो रूप सामने उभर कर आया है वह एकदम अनोखा है। इनका लेखन स्त्री की मानसिक दशा व उसके जीवन के ऐसे पहलू को प्रस्तुत करता है जिनके लिए देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

धर्मशास्त्र, कानून व्यवस्था, समाज, परिवार इत्यादि जबावदेह हैं। विकास और उन्नति पर प्रश्नचिन्ह लगाती हुई समय और समाज का वह चेहरा सामने लाती है जिसमें स्त्री पूरी तरह लहू-लुहान नजर आती है। अलका सरावगी के उपन्यासों का स्त्री विमर्श केवल स्त्री-विमर्श नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रति एक जागरूक लेखिका के सरोकार हैं जो औरत के द्वारा आबाद दुनिया में उसकी बेहतर जिंदगी को देखने की कामना है। अलका सरावगी आज के समय की एक ऐसी कथा लेखिका हैं, जिनके उपन्यासों में मानवीय संवेदना का विशाल भण्डार है। मानव के रूप में चित्रित नारी इनके कथा साहित्य का प्राण है। स्त्री विमर्श के प्रति अलका सरावगी ने जो दृष्टिकोण अपनाया है वह स्त्री विमर्श की परम्परा से हटकर नये रास्तों की खोज करता है। बड़ी कुशलता के साथ लेखिका सीमित मध्यमवर्गीय परिवेश में सांस लेती नारी का चित्रण करती है, जो कभी झुंझलाती है, बोखलाती है और कभी अपने प्रश्नों के अभावों से जूझती है तो कभी समझौता भी करती है। इसी समस्या पर डॉ.विजय द्विवेदी ने कहा है कि, ''आज की नारी अपने चतुर्दिक परिवेश से अंतर्राष्ट्रीय माहौल से अपने को जोड़ना तो चाहती है किन्तु संस्कारवादित परम्पराबद्धता उसके आड़े आ रही है। वह इनके किसी मध्यम मार्ग की खोज अथवा समझौता नहीं कर पा रही हैं। यह एक विडम्बना पूर्ण स्थिति है अतः अपने ही बंधे-बधाए परिवेश में स्वयं को साहसी क्रांतिकारी अथवा स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करने की बात करना कोई माने नहीं रखता।''

नारी की मानसिकता और उसकी स्थिति का चित्रण अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में अलग-अलग दृष्टिकोण से किया है।

कथा साहित्य में नारियों ने कथा वस्तु के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है 'कलि-कथाः वाया बाइपास' में स्त्री पात्र भले ही कम आए हैं लेकिन उनकी उपस्थिति उपन्यास में प्राथमिक है। लेखिका ने उपन्यास में स्त्री जीवन के अनेक पक्षों पर प्रकाश डाला है, जिसमें वह कभी संघर्ष करती नजर आती हैं तो कभी अपने जीवन के मायने तलाश करती दिखाई देती है। नारी धैर्य और साहस की प्रतिमूर्ति होती है, इसलिए जीवन में आने वाली समस्याओं से विचलित नहीं होती है। ''माँ की आँखें तरलता को आने से पहले ही सोख लेती हैं वे अपने शब्दों को मजबूती से सहारा देकर खड़ा करती हैं।'' हर तकलीफ को चुपचाप सहती हैं और किसी से कुछ न कह पाने की विवशता में जीती हैं। ''माँ को दादी के ऐसे कहने से बहुत तकलीफ होती पर वे कुछ कर नहीं पाती थी। वे न पिताजी को ऐसा करने से रोक सकती थी और न दादी को ऐसा कहने से।'' 'कलि कथा' की नारी पात्र विमली का जीवन भी इसी विवशता पर आधारित है। शिक्षा के अभाव और समाज के द्वारा निर्धारित जीवन शैली में वह खुद को ढाल लेती है। ''गाँव की औरतें खुली जगहों में रहने के बाद यहाँ शहर में घुटन महसूस करती हैं।''

असल में भारतीय नारी की इस जीवन शैली का कारण उनकी स्वयं की सोच भी है। वह परम्परा और मर्यादा को बनाए रखने के नाम पर अपने आप को कभी उस पायदान पर नहीं खड़ा करना चाहती जहाँ से समाज उस पर उंगली उठा सके। इसलिए वह उस निर्धारित जीवन को अपने लिए स्वीकार कर लेती है। स्त्री को अपने छोटे से छोटे निर्णय के लिए पुरूष की स्वीकृति की आवश्यकता होती है। उसके जीवन की डोर पुरूष सत्ता के हाथ में होती है अपने ही शरीर पर

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पहनने वाले कपड़ों के लिए भी वह पुरूषों की अनुमति का इंतजापर करती है। 'मर्यादा' एक एक ऐसा भयानक शब्द है जो स्त्री को हर तरफ से डराने और बांधकर रखने के लिए कारगर है। यह स्त्री को अनेक दुःख व कष्ट होने के बावजूद भी उस जीवन में रहने के लिए मजबूर कर देता है जिसमें दुःख, दर्द और पीड़ा हे और नारी उसे सहते हुए सहनशीलता की प्रतिमूर्ति बन जाती है। नारी जीवन अभावों का सागर है और इस सागर में कुछ बूंदे विचारों के अभाव की भी हैं। अलका सरावगी ने सविता के द्वारा नारी की इस सीमित सोच के दायरे को दर्शाया है, जो कि उसको मानसिक रूप से भी अपनी प्रगति के दायरे को बढ़ाने की अनुमति नहंी प्रदान करती है। ''वह उनकी उम्मीद के ठीक मुताबिक लड़की 'टेबुल के नीचे निगाहें, जमाए अपने हाथ की रेखाओं को देखती हुई उनके पहले प्रश्न का इंतजार कर रही थी। रूबी दी को जोर की चिढ़ हुई। इस लड़की से पाँच-सात बात मिल लेने के कारण इतना जान गई थी कि यह लड़की कुछ भी कहने से पहले हमेशा प्रश्न पूछे जाने का इंतजार करती है और इतना छोटा जबाव देती है कि उससे पूरी बात समझनेके लिए कम से कम चार प्रश्न और करने पड़े।'' वास्तव में नारी की इस सीमित सोच का कारण वह समाज है जिसमें वह पैदा होकर बड़ी होती है। ''जिस दुनिया में वे बड़ी हुई थी, वहाँ इस तरह की कोई निजी बात, जिसको पूछने का कोई विशेष मकसद न हो, किसी से पूछना अमर्यादित व्यवहार था।'' इस अमर्यादित व्यवहार से बचने और अपने को मर्यादित बनाए रहने के लिए वह इस सीमा में कैद रहती है जिसका निर्धारण समाज उसके लिए करता है। ''अपनी जिंदगी को एक नया मोड़ देने के लिए जब घर की चहारदीवारी के बाहर कदम रखा था, तब से आज तक ऐसा नहीं हुआ कि आदि गंगा का बेलीस पुल पार करने के बार घर की तरफर जाते हुए उन्होंने घर गृहस्थी के अलावा किसी के बारे में कुछ सोचा हो। पुल पार करते ही उनकी दुनिया का वह हिस्सा जिसमें वे दूसरों के लिए जीती थीं, एकदम कटकर अलग हो जाता था। यह पुल उनके लिए एक लैंडमार्क था अपनी दुनिया में प्रवेश की सरहद।'' रूबी दी के जीवन से जुड़ा यह तथ्य नारी के जीवन की सीमा को रेखांकित करता है। इस सीमा में कैद नारी ही चरित्रवान है जो इस सीमा से बाहर आकर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती है।

'कोई बात नहीं' नारी की इस दशा का वर्णन करता है जिसमें वह सारी उम्र दुःख और कष्ट को सहती है। ''जनक नंदनी सीता ने सारे जीवन दुःख ही दुःख जो देखा था।'' इस उपन्यास के पुरूष पात्र शीर्षेन्द्र की पत्नी इस सत्ता का शिकार है जो पुलिस अफसर के रूप में अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। ''जतीन दा फिर शीर्षेन्द्र की पत्नी को दी गई यातनाओं का वर्णन करने लगे थे। कैसे उसे बालों से पकड़कर घसीटा, कैसे उसे जानवर की तरह एक महीना नहाने और कपड़े बदलने नहीं दिया गया, कैसे उसे मुँह में झाग आने पर ही मारना बंद किया जाता था।'' स्त्री शरीर से पुरूष से भिन्न और कोमल होने के कारण वह पुरूष के अत्याचारों को पुरूष के तरह सह नहीं पाती है। ''सबसे ज्यादा मुश्किल था कोर्ट में यह प्रमाणित करना कि शीर्षेन्द्र की पत्नी इसलिए अपाहिज हुई थी क्योंकि उसे इस बुरी तरह मारा गया। उसका निचला हिस्सा धीरे-धीरे कई महीनों में जाकर बेकार हुआ था। सरकार के वकील ने कहा कि उसकी बीमारी का उसकी चोटों से कोई संबंध

नहीं है।'' अलका सरावगी विचारों से सशक्त लेखिका हैं। एक तरफ इन्होंने कई नारी पात्रों द्वारा नारी शोषण का वर्णन किया तो दूसरी तरफ आज की सशक्त हो रही नारी का भी चित्रण किया।

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में नारी के उस रूप का वर्णन है जो दुर्गा, काली का पर्याय है। आज की नारी अपने अधिकारों को पूर्ण रूप से प्राप्त करना चाहती है और अधिकारों की प्राप्ति के लिए वह संघर्षरत भी है। 'एक ब्रेक के बाद' की नारी पात्र 'शीरी' औरत के उस रूप का प्रतिबिम्ब है जो हिम्मत और बहादुरी के साथ जीवन जीना जानती है। शीरी नारी की प्रगति का सूचक है तथा नारी के उस रूप का खण्डन करती है जो दबी, कुचली और प्रताड़ित है। ''वह शीरी है हवा में गोली चला रही है जैसे ही भालू की आवाज सुनती है या कल्पना करती है कि भालू पास के खजूर के पेड़ पर चढ़ा है, तो बस गोली चला दी।'' शीरी आज की वह नारी है जो अपने निर्णय स्वयं करने में सक्षम है। नारी के इस अदम्य साहस और शक्ति के कारण वह दिन दूर नहीं जब उसकी अपनी पहचान बिना किसी सूचक के होगी। वह आधी आबादी का प्रमुख हिस्सा है और समाज में उसका वही अस्तित्व है जो एक पुरूष का है।

''बहुत हिम्मती औरत है 'शीरी' गुरू ने कहा-इसने अपने जीवन के सारे चुनाव खुद किए हैं और मेरे ख्याल से यह बात दुनिया में बहुत कम लोग अपने बारे में बोल सकते हैं। इसके पति फौज में थे। शीरी यहाँ के रजवाड़े में बरसों से गवर्नेस रही है।

इस इलाके में ऐसा कोई नहीं जो इसे जानता और मानता नहीं। भालू तक नहीं फटकता इसके यहाँ।'' स्त्री शोषण, अन्याय और अत्याचार का इतिहास जितना पुराना है उतना ही मजबूत है।

## निष्कर्ष

वर्तमान प्रगतिशील समाज में नारी अपनी पहचान का परचम लहराने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। किसी भी समाज में पुरूष वर्ग की ताकतों के बीच एक नारी का अपना अस्तित्व स्थापित करना उसके अदम्य साहस प्रतीक है। जिस समाज में हर क्षेत्र में पुरूष की सत्ता कायल हो उस समाज में एक स्त्री का अपनी जगह बनाना एक नये इतिहास का निर्माण करता है। लेखिका ने अपनी उपन्यासों में मध्यवर्ग के पारिवारिक यथार्थ एवं उसकी समस्याओं का सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया है। आधुनिक नगर बोध की उदासी का अंकन और शहरी जीवन व परिवार की अनुभूति का प्रवण चित्रण भी इनके उपन्यासों में देखा जा सकता है।

## संदर्भ सूची

1 अलका सरावगी, कलि-कथा-वाया बाइपास, आधार प्रकाशन पंचकूला, हरियाणा, 134113, एस.सी.एफ., 267, सेक्टर-16, प्रथम संस्करण, 2001

2 अलका सरावगी, शेष कादम्बरी, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण, 2001

3 अलका सरावगी, कोई बात नहीं, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण, 2004

4 अलका सरावगी, एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण, 2008

5 डॉ.प्रीति त्रिवेदी, नारी विमर्श और अलका सरावगी का कथा साहित्य, चिंतन प्रकाशन, उए/119, आवास विकास, हंसपुरम, कानपुर, 208021, प्रथम संस्करण, 2014